कॉशन होता तो नहीं मरते लोग

जागरण संवाददाता, पटना : जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन को कात्यायनी पीठ में सोमवार को मेला लगने व हजारों दर्शकों के जुटने की पूर्व सूचना थी। श्रावण मास के दौरान हर सोमवार को यहां मेला लगता है। भीड़ तो पूरे महीने होती है परंतु सोमवार को अधिक लोग जुटते हैं। स्थानीय प्रशासन को रेलवे के अधिकारियों के साथ तालमेल बनाते हुए यहां हर ट्रेन को कॉशन पर चलाने की व्यवस्था करना चाहिए था। प्रशासनिक उदासीनता तो थी ही स्टेशन मास्टर को भी कॉशन लगाने का अधिकार था। उसने भी मंडल मुख्यालय को इसकी कोई सूचना नहीं दी और न ही अपनी ओर से कॉशन लगाने का प्रयास किया। ट्रेनें अगर कॉशन पर चलतीं तो सहरसा में ही सुपरफास्ट ट्रेनों के ड्राइवर व गार्ड को मेमो मिल जाता और ट्रेन 20 किलोमीटर से अधिक स्पीड से नहीं चलती। तब किसी तरह की कोई घटना नहीं घटती।

दुर्घटना के बाद उठे सवाल

- इस स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज क्यों नहीं बनाया गया था?
- पुल पर बाढ़ के दिनों में सुरक्षा के मद्देनजर 60 किमी प्रतिघंटे की स्पीड से ही ट्रेन चलाना है फिर गति 80 से अधिक क्यों रखी गई?
- ट्रेन को कॉशन पर क्यों नहीं चलाया गया?
- मेले की पूर्व सूचना स्टेशन मास्टर को थी फिर भी मुख्यालय को रिपोर्ट नहीं किया गया?
- भौगोलिक स्थिति को जानते हुए भी दोनों ट्रैक पर सवारी गाड़ियों को एक साथ खड़ा क्यों किया गया?
- स्टेशन पर प्राथमिक उपचार किट क्यों नहीं रखा गया था?
- घटना के बाद राहत ट्रेन पहुंचने में पांच घंटे क्यों लगे?

मौत की ट्रेन

यहीं बदलाघाट में सवारी गाड़ी नदी में गिरी थी, मरे थे सैकड़ों

जागरण संवाददाता, पटना : सहरसा-मानसी रेलखंड इसके पूर्व भी भयानक रेल हादसे का गवाह रहा है। बदलाघाट में 32 वर्ष पूर्व 6 जून 1981 को एक भयानक दुर्घटना हुई थी। सहरसा-मानसी छोटी रेल लाइन खंड पर 416 डाउन समस्तीपुर-बनमनखी सवारी गाड़ी पुल संख्या 51 के पास पटरी से उतरी और पूरी ट्रेन बागमती नदी में समा गई थी। उस वक्त ट्रेन में 800 यात्री सवार थे। पांच दिन बाद ट्रेन से 200 यात्रियों के शव निकाले गए थे। सैकड़ों शव तेज बहाव में ही बह गए थे। कुछ भाग्यवान तैरकर बाहर आ पाए थे। इसके बाद ही बड़े पुल का निर्माण किया गया।

घटना से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- घटना 6 जून 1981 को शाम 4.47 बजे हुई थी दुर्घटना
- ट्रेन संख्या- 416 डाउन समस्तीपुर बनमनखी सवारी गाड़ी
- सवार यात्रियों की संख्या- 800
- मृतकों की संख्या - 400 से अधिक
- घटनास्थल- बदलाघाट-धमारा स्टेशन के बीच 8/5-6 किमी मानसी-सहरसा रेलखंड

रेलखंड पर चलती हैं 28 गाड़ियां

- सहरसा-मानसी रेलखंड पर चलने वाली ट्रेनों की संख्या- 28
- 18 एक्सप्रेस/ सुपरफास्ट व 10 सवारी गाड़ियां
- स्टेशन पर सड़क संपर्क नहीं

चीत्कार के बीच अपनों को ढूंढ रही थीं निगाहें

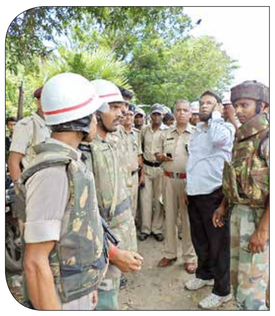

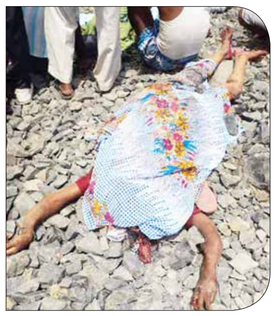

अमरेन्द्र कांत, सहरसा

- रेल पटरियों पर बिखरे शवों में लोग तलाश रहे थे अपनों को
- गाजर-मूली की तरह कटे लोगों की पहचान हो रही थी मुश्किल
- सात घंटे बाद तक मौके पर नहीं पहुंचे कोई प्रशासनिक व रेलवे के अधिकारी

सहरसा-मानसी रेलखंड के धमहरा स्टेशन के समीप रेल पटरियों पर बिखरे पड़े तीन दर्जन शवों के बीच लोग अपनों को तलाश रहे थे। गाजर-मूली की तरह कटे लोगों की पहचान भी मुश्किल से हो पा रही थी। परिजनों की चीत्कार, क्रंदन से लोगों की आंखें भी नम हो रही थी। कुछ जख्मी पड़े लोग दर्द से कराह रहे थे। पूरी स्थिति भयावह बनी थी।

अम्मा खगड़िया निवासी कलेश्वर उर्फ सुरेश के शव के पास उसका साथी रासो बैठा था। उसकी आंखों से आंसू की अविरल धार बह रही थी। पूछने पर बताया, सभी लोग बाजा बजाते हुए कात्यायिनी स्थान जा रहे थे। बाजे की आवाज में ट्रेन की सीटी नहीं सुनाई दी। ट्रेन की रफ्तार इतनी थी कि लोग संभल नहीं पाए। मुझे हल्की चोटें आई।

हादसे में अपनी पत्नी सूचन देवी व सास को गंवा चुके गोगरी के पितोंजियां निवासी सदानंद मालाकार शवों के साथ लिपटकर रो रहे थे। सदानंद ने बताया, वे पत्नी व सास के साथ पूजा-अर्चना करने आए थे, अब क्या करें। शव को कफन तक नहीं मिल रहा। अपने दो मासूम बच्चों को ढूंढने पहुंचे धुश्मरी विशनपुर गांव के राजो यादव की नजर जैसे ही अपने आठ वर्षीय पुत्र पिंटू व दस वर्षीय भतीजे के शव पर पड़ी, वे दहाड़ मारकर रोने लगे। शव को अपने गमछे से ढकने बाद उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था, बस छाती पीटकर रेल प्रशासन को कोस रहे थे। घटना में अपनी मां उमा देवी व पिता लक्ष्मी यादव को खो चुके धुश्मरी विशनपुर निवासी राजो यादव बस एकटक लोगों को निहार रहे थे। राजो ने बताया, शवों को किनारा करने में काफी मशक्कत हुई। जब मां-पिता पूजा करने जा रहे थे तो उन्होंने कुछ रुपये दिए थे। दो घंटे के बाद पता चला कि ट्रेन से कट गए हैं। मानसी थाना क्षेत्र के राजाजान गांव निवासी सुमन यादव अपने रिश्तेदार दुखा यादव के शव के पास बिलख रहे थे। हालत ऐसी थी कि कोई अपनों को शव के बीच ढूंढ रहा था तो कोई शव मिलते ही दहाड़ मारकर रो रहा था। घटना के सात घंटे बाद तक न तो कोई प्रशासनिक अधिकारी और न ही रेलवे के कोई अधिकारी पहुंचे थे।

स्टेशन पर पहले से दो ट्रेनें दो पटरी पर लगी हुई थी। सहरसा से पटना जाने वाली राज्यरानी एक्सप्रेस का स्टेशन पर ठहराव नहीं रहने के कारण ट्रेन बीच के ट्रैक से तेज रफ्तार से जा रही थी। इसी ट्रेन की चपेट में आने से 37 लोगों की मौत हो गई। इनमें महिलाएं व बच्चे भी थे। सभी लोग स्टेशन से कुछ दूरी पर अवस्थित मां कात्यायिनी स्थान पूजा-अर्चना के लिए जा रहे थे। अंतिम सोमवारी होने के कारण खगड़िया, मुंगेर, भागलपुर जिले के लोग ट्रेन से उतरकर गाजे-बाजे के साथ मैया के दर्शन को जा रहे थे, इसी दौरान यह हादसा हो गया।

बिहार में रेल हादसे

4 अप्रैल 1998 को पटना जिले के फतूहा स्टेशन के निकट फिश प्लेट निकाल लिए जाने के कारण हावड़ा-दानापुर एक्सप्रेस की नौ बोगी बेपटरी हो गई थी। इसमें 11 यात्रियों की मौत हो गई थी। जबकि 50 यात्री घायल हुए थे। रेलवे सूत्रों ने बताया था कि पटरी के दायीं ओर के फिश प्लेट निकाल लिए जाने के कारण यह हादसा हुआ।

- 22 मई 2011 को मधुबनी जिले में एक मानव रहित रेलवे क्रासिंग पर एक पैसेंजर ट्रेन एक वाहन से टकरा गई थी। इस हादसे में वाहन में सवार 16 लोगों की मौत हो गई थी।
- 10 सितंबर 2002 को कोलकाता से नई दिल्ली आ रही राजधानी एक्सप्रेस औरंगाबाद जिले में धावे नदी के पुल से नीचे गिर गई थी जिसमें 120 लोग मारे गए थे। हादसे में 150 यात्री घायल हुए थे।
- 16 जुलाई 1992 को दरभंगा में रेल हादसे में 60 लोगों की मौत हो गई थी।
- 16 अप्रैल 1988 को शटल ट्रेन में आग लग जाने की वजह से 70 यात्रियों की जलने से मौत हो गई थी।
- 01 नवंबर 1988 को सकलडीहा (आरा-बक्सर) में तूफान एक्सप्रेस के बेपटरी हो जाने से 48 लोगों की मौत हो गई थी।
- 10 मार्च 1986 को खगड़िया में दो ट्रेनों की टक्कर में पचास लोगों की मौत हो गई थी। हादसे में 200 घायल हुए थे।

रेल पटरियों के बीच चलने की मजबूरी

जाप्र, सहरसा : कोपरिया व मानसी के बीच फनगो, धमारा घाट व बदला स्टेशन तक जाने के लिए लोगों को आज भी पक्की सड़क नसीब नहीं है। लोग कच्ची सड़क होकर रेलवे ट्रैक के पास पहुंचते हैं। वहां से रेलवे पटरी होते हुए कई पुलों को भी पार करते हैं। बाइक व साइकिल सवार को भी इसी होकर गुजरना पड़ता है। सड़क की सुविधा नहीं रहने के कारण लगभग एक वर्ष पूर्व भी फनगो हॉल्ट के समीप बने पुल पर ट्रेन हादसा हुआ था। इसमें कई यात्रियों की जानें गई थीं। इसके बावजूद सड़क निर्माण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हो पाई।

छिपकर भागे गार्ड ने कहा तेज गति के कारण ज्यादा लोग मरे

चन्द्रशेखर, पटना

सहरसा से पटना जंक्शन तक आने वाली 12567 राज्यरानी एक्सप्रेस के खुलने का सही समय सहरसा से 7 बजे है। सोमवार को यह ट्रेन सहरसा से ही एक घंटे लेट से 8.05 बजे खुली। लगभग 8.40 बजे यह धमाराघाट स्टेशन के पास से गुजर रही थी। उस वक्त ट्रेन की गति आम दिनों की तरह 80-90 किमी प्रति घंटे की थी। ट्रेन के पुल से गुजरने के बाद ही स्टेशन आ जाता है। दोनों ओर से रेलवे ट्रैक पर सवारी गाड़ियां खड़ी थीं। इसके कारण रेलवे ट्रैक के किनारे खड़े श्रद्धालु नजर नहीं आ रहे थे। अचानक जब श्रद्धालुओं पर ड्राइवर की नजर पड़ी तो उसने इमरजेंसी ब्रेक लगा ट्रेन रोकने की कोशिश भी की परंतु अधिक रफ्तार होने के कारण ट्रेन रुकते-रुकते दर्जनों कांवरियों को चपेट में ले चुकी थी। यही कहना है ट्रेन के गार्ड एसएन प्रसाद का।

गार्ड श्री प्रसाद की मानें तो आम तौर पर यह ट्रेन इस स्टेशन से 80 से 100 किमी प्रति घंटे की स्पीड से गुजरती है। आज भी इसकी यही स्पीड थी। ट्रेन के रुकने के पहले ही उन्हें अहसास हो गया था कि कुछ बड़ी घटना घटित हो चुकी है। उन्होंने तत्काल अपनी उजली कमीज को उतार फेंका और टी शर्ट पहन ट्रेन के रुकते ही नीचे उतर कर भीड़ में शामिल हो गए। घटना के बाद भीड़ आक्रोशित हो गई थी। ड्राइवर राजाराम पासवान एवं एस के सुमन को पकड़ कर पिटाई की जा रही थी। वे तत्काल दूसरी ओर भागे और समस्तीपुर कंट्रोल को पूरी घटना की जानकारी दे दी। इसके बाद डर से काफी देर तक मोबाइल बंद रखा। लोग काफी उग्र हो गए थे। आसपास के गांव एवं मेले में शामिल लोग भी तब तक वहां पहुंच चुके थे।

मदद को आगे बढ़े कई हाथ

चितरंजन सिंह, चौथम प्रतिनिधि

सोमवार को मानसी-सहरसा रेल खंड के धमहारा स्टेशन पर हुए भयानक हादसे ने 6 जून 81 की घटना याद दिला दी। तब आंधी के दौरान बदला एवं धमहारा के बीच ट्रेन की छह बोगियां बागमती नदी में समा गई थीं। लेकिन उस समय और आज की घटना में फर्क नजर आया। उस समय 200 लोग डूबकर मर गए थे। आरोप लगा था कि नदी की धारा में जान बचाकर भाग रहे लोगों का सामान छीन कर उन्हें डूबो दिया गया। इस बार बोगी में आग लगाई भी गई तो यात्रियों को सामान लेकर निकलने का मौका दिया गया। स्टेशन के सामने के गांव बंगलिया टोले के लोगों ने कई घायलों को कंधे पर लाद कर परित्यक्त रेल पुल को पार कराकर इलाज के लिए भेजा। ट्रेन की बोगी के नीचे फंसे शवों को बंगलिया निवासी सुनील सिंह ने सबसे पहले निकालना शुरू किया। इसके बाद तो कई हाथ मदद में आगे आ गए। उन्होंने शवों की पहचान कराने में भी लोगों की मदद की। घायलों का प्राथमिक उपचार ग्रामीण चिकित्सक द्वारा भी किया गया। खगड़िया के शहीद प्रभुनारायण अस्पताल के चिकित्सक एवं एएनएम की टीम एम्बुलेंस के साथ घायलों का इलाज करने पहुंची। इसके अलावा जिला परिषद अध्यक्ष कृष्णा कुमारी यादव, जन वितरण प्रणाली संघ के जिलाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह, जिला भाजयुमो अध्यक्ष अश्विनी कुमार सिंह समेत कई लोग घायल व यात्रियों की मदद में हाथ बंटाने में लगे रहे।

सूचना मिलते ही सक्रिय हुआ रेल प्रशासन, लेकिन...

- उपद्रव और मारपीट की वजह से घटनास्थल पर तुरंत नहीं पहुंच पाए अधिकारी
- कई ट्रेनें रद, कुछ का आंशिक समापन
- हेल्पलाइन नंबर जारी, ली जा रही पल-पल की जानकारी

जागरण संवाददाता, पटना : पूर्व मध्य रेल के समस्तीपुर मंडल रेल प्रबंधक अरुण कुमार मल्लिक को लगभग नौ बजे इस घटना की सूचना मिली। उन्होंने पूर्व मध्य रेल मुख्यालय को इसकी जानकारी दे दी। महाप्रबंधक मधुरेश कुमार के निर्देश पर डीआरएम श्री मल्लिक सबसे पहले घटनास्थल की ओर रवाना हो गए। इसके बाद महाप्रबंधक श्री कुमार भी अधिकारियों की टीम के साथ धमाराघाट स्टेशन के लिए रवाना हो गए। बरौनी व सहरसा से मेडिकल की टीम भी घटनास्थल के लिए रवाना कर दी गई। लेकिन वे घटनास्थल पर पहुंच नहीं पा रहे थे। वहां से उपद्रव की सूचना आ रही थी। आक्रोशित भीड़ तोड़फोड़ कर रही थी। घटनास्थल पर आक्रोशित लोगों द्वारा तोड़फोड़ व ट्रेन में आगजनी किए जाने की सूचना मिलते ही अधिकारियों की टीम मानसी व पोपड़िया में रुक गई। सूचना मिली कि लोगों ने ड्राइवर राजाराम पासवान की पीट-पीट कर हत्या कर दी, जबकि सहायक चालक एसके सुमन की स्थिति गंभीर बनी हुई है। इस भय से मेडिकल टीम भी यहीं रुकी रही। स्थानीय डीएम व एसपी भी मानसी में आकर ही रुक गए।

इधर, घटना की सूचना मिलते ही रेल एडीजी पीएन राय भी घटनास्थल के लिए रवाना हो गए। श्री राय भी अधिकारियों की टीम के साथ मानसी तक पहुंच गए। काफी देर तक राय-विचार चलता रहा। बाद में सारे अधिकारी घटनास्थल तक गए और जख्मी लोगों का इलाज कराने में जुट गए।

राज्यरानी एक्सप्रेस की घटना के बाद मानसी-सहरसा रेलखंड पर ट्रेन परिचालन पूरी तरह ठप है। इसके कारण कुछ ट्रेनों को रद कर दिया गया है तो कुछ का आंशिक समापन किया गया है।

रद की गई ट्रेनें

- 15209 सहरसा-अमृतसर जनसेवा एक्सप्रेस
- 15275 सहरसा-बरौनी एक्सप्रेस
- 12568 राज्यरानी एक्सप्रेस
- 15282 पटना-सहरसा कोसी एक्सप्रेस

आंशिक समापन

- 12204 सहरसा अमृतसर गरीब रथ एक्सप्रेस बेगूसराय तक ही चलेगी। यहीं से यह ट्रेन 12203 बनकर अमृतसर के लिए लौटेगी।
- 13163 सियालदह सहरसा हाटे मानसी तक ही जाएगी। यहीं से 13164 बनकर लौट जाएगी।
- 15210 अमृतसर-सहरसा जनसेवा एक्सप्रेस बरौनी तक ही जाएगी।
- 23226 बरौनी सहरसा लिंक एक्सप्रेस खगड़िया तक ही चलेगी। यहीं से यह ट्रेन लौट जाएगी।

पैदल ही घर लौटे राज्यरानी के यात्री

जागरण प्रतिनिधि, सहरसा : रेल हादसे के बाद राज्यरानी सुपरफास्ट एवं धमहरा स्टेशन पर खड़ी दो अन्य पैसेंजर ट्रेनों के यात्रियों को अपने गंतव्य तक जाने के लिए पैदल ही अपने घरों की दूर तय करनी पड़ी। कोपरिया व मानसी के बीच अवस्थित स्टेशन पर पूरे दिन अफरातफरी का माहौल बना रहा। हादसे के बाद राज्यरानी ट्रेन में सवार लोग भी इधर-उधर भागने लगे। आक्रोशित लोगों ने ट्रेन में आग लगी दी, लिहाजा यात्रियों ने गाड़ी से उतर कर पहले सुरक्षित स्थानों पर खुद को महफूज किया। बाद में धीरे-धीरे अपने घरों को पैदल ही लौटने लगे। रेलवे स्टेशन से कोपरिया व मानसी तक सड़क मार्ग नहीं रहने के कारण लोग रेल पटरी के बगल से होकर कोपरिया व मानसी पहुंचे। राज्यरानी के एक यात्री शंभू साह ने बताया कि उन्हें पटना जाना था लेकिन अब वे लौटकर सहरसा जा रहे हैं। यात्री शोभा देवी, सुरेंद्र कुमार अपनी गोद में बच्चे व सामान लेकर लौट रहे थे।

ये हुए ट्रेन दुर्घटना के शिकार

1. दुखनी देवी, (पति मनोज यादव, खुटिया मानसी, खगड़िया)
2. सौरव कुमार, (पिता हरवल्लम यादव, खुटिया मानसी)
3. प्रिया कुमारी, (पिता राजेश यादव, खुटिया मानसी)
4. नरेश यादव, (लघेड़, हसनपुर, समस्तीपुर)
5. शिवू नागर, (लघेड़, हसनपुर, समस्तीपुर)
6. किशोर महतो (फरेह चौथम)
7. सत्यनारायण शर्मा, (बभनगामा, खगड़िया)
8. जर्नादन यादव, (रानीसकरपुरा, खगड़िया)
9. जिच्छो देवी, (नारायणपुर, भागलपुर)
10. सूचन देवी, (पितुंझिया गोगरी)
11. जानो यादव, (रानीसकरपुर, खगड़िया)
12. लक्ष्मी यादव, (धुसमुरी विशनपुर खगड़िया)
13. उमा देवी, (धुसमुरी विशनपुर खगड़िया)
14. रामवृक्ष कुमार, (धुसमुरी विशनपुर खगड़िया)
15. पिंटू कुमार, (मुबारकपुर, सलखुआ, सहरसा)
16. सुरेश राम, (अंबा इचरूआ, अलौली, खगड़िया)
17. सुमित्रा देवी, (मुबारकपुर सलखुआ, सहरसा)
18. शुभक पासवान, (तौफिर गढ़िया)
19. सुशीला यादव, (मानसी)
20. वालेश्वर राम, (अंबा-इचरूआ, अलौली)
21. रामपरी देवी, (मुबारकपुर, सलखुआ, सहरसा)
22. सोगारथ सिंह, (बंगलिया, चौथम)
23. रामराज कुमार, (दाढ़ी, भदास)

(शेष मृतकों की पहचान करने की कोशिश की जा रही है। मृतकों की संख्या और बढ़ने की संभावना है।)

घायलों की सूची

1. नागेश्वर राम, (अंबा इचरूआ, अलौली खगड़िया)
2. सिन्टू कुमार, (खुटिया मानसी, खगड़िया)
3. राममूर्ति महतो, (रानीसकरपुरा, खगड़िया)
4. माधुरी शर्मा, (डहरी भदास, खगड़िया)
5. श्रुति देवी, (धुसमुरी विशनपुर, खगड़िया)
6. सीता देवी, (धधेर, हसनपुर, समस्तीपुर)
7. रामपुल देवी, (धधेर, हसनपुर, समस्तीपुर)
8. विमला देवी, (नौरंगा, चौथम, खगड़िया)
9. रूपम कुमारी, (खुटिया, मानसी)
10. टुटु कुमार, (खुटिया, मानसी)
11. विमला देवी, (नौरंगा, चौथम)
12. श्रुति देवी, (वभनगामा,खगड़िया)
13. सीता देवी, (लदौरा, हसनपुरा)
14. रामफुल देवी, (लदौरा)
15. राममूर्ति सिंह,(रानीसकरपुरा, खगड़िया)
16. अधुरिया देवी, (तौफिर गढ़िया)